विद्या भारती प्रदीपिका

चैत्र से ज्येष्ठ, विक्रमी संवत् 2080, युगाब्द 5125

अप्रैल से जून 2023 वर्ष 43 अंक 3 मूल्यः ₹35/-

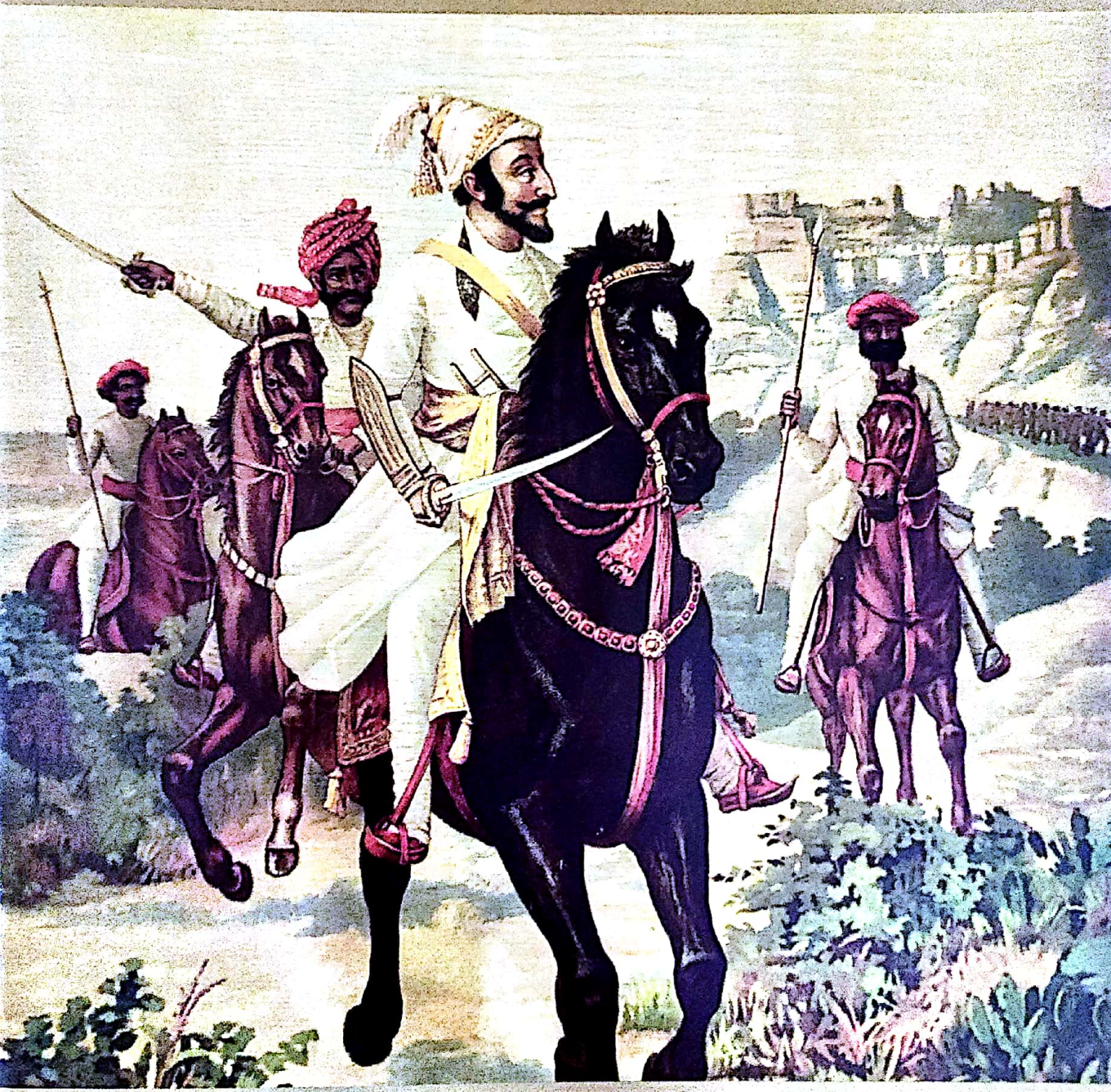

भारतीय ज्ञान परम्परा, शिक्षा का भारतीय दर्शन, निम्बार्काचार्य..., शिक्षा जगत् में समसामयिक विमर्श

Shivalaya Ottam, Bharat : This decade, Bhupen Hazarika

Scanned with CamScanner

ISSN 2395 - 6267 कुल प्रकाशित पृष्ठ 68 RNI NO. 37111/1981

एक अध्यापक या प्रोफेसर या प्रिंसिपल या वाइस चान्सलर अपने विद्यार्थी के सम्मान के लिए आगे आता है। लोगों को आश्चर्यजनक लगता है। ऐसा सुनने में दुर्लभ होता है कि अपने शिष्य के सम्मान के लिए रेलवे स्टेशन पर वाइस चान्सलर आ जाता है। अपने विद्यार्थी का सम्मान करता है। सोमनाथ चटर्जी हमारे लोकसभा सदस्य थे। कम्युनिस्ट पार्टी के बड़े नेता थे। इनके पिता एन. सी. चटर्जी थे। सोमनाथ चटर्जी ने थोड़े पहले एक लेख लिखा। सोमनाथ चटर्जी लिखते हैं कि मेरे पिता जी एन. सी. चटर्जी के शिक्षक आशुतोष मुखर्जी वाइसचांसलर थे कलकत्ता विश्वविद्यालय के। बड़े प्रभावी, तेजस्वी वाइसचांसलर थे, जिनसे अंग्रेज भी डरते थे। एक दिन आशुतोष मुखर्जी ने मेरे पिताजी को बुलाकर कहा, मिस्टर एन. सी. चटर्जी, गो टू लंदन, हैव ए डिग्री ऑफ बार एट लॉ एण्ड देन, कम टू इण्डिया। तुम लंदन जाओ वहाँ से डिग्री प्राप्त करो फिर भारत आओ। मेरे पिताजी चले गए, वहाँ पढ़ाई की, अच्छा स्थान पाया। लंदन से वापस आये। कल्पना भी नहीं थी कि ट्रेन के दरवाजे पर स्वागत करने के लिए सर आशुतोष मुखर्जी खड़े मिलेंगे। एक वाइस चांसलर अपने विद्यार्थी का स्वागत करने के लिए हाथ में माला लेकर हावड़ा स्टेशन पर खड़ा था।

मेरे पिताजी जीवन में कभी इस बात को नहीं भूले। इस प्रसंग को याद करके वे भावुक हो जाते थे। वे कहते थे, कैसे वाइस चांसलर थे वे?, कैसे हमारे प्रोफेसर थे वे ? मुझे भेजा, व्यवस्था की। मैं जब पढ़ कर आया, दरवाजे पर खड़े मिले अर्थात् अपने विद्यार्थी का सम्मान करने के लिए रेलवे स्टेशन पर आए। विद्यार्थी यह भूल सकता है कभी ? यह शिक्षा का दर्शन है कि अध्यापक के सामने विद्यार्थी भगवान् के रूप में, ईश्वर के रूप में आता है। तब यह विद्यार्थी खड़ा होता है।

– डॉ. कृष्णगोपाल जी, सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्रीराम आरावकर के द्वारा विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (स्था
जेनिसिस प्रिंटर, सी 74, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110020 (प्रेस) से मुद्रित एवं
जी. एल. टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065 (प्रकाशन स्थल) से प्रकाशि
सम्पादक–डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

Scanned with CamScanner